# 13. दादी जी के महावाक्य

यह बेहद की युनिवर्सिटी में पढ़ाने वाला प्रोफेसर, सुप्रीम टीचर परमात्मा है। भले यह प्यारे सुप्रीम फादर का घर भी है परन्तु साथ–साथ युनिवर्सिटी भी है तो आप सभी इस समय गॉडली स्टूडेंट बनकर सुप्रीम टीचर द्वारा इस ज्ञान–योग की पढ़ाई पढ़ रहे हो।

इस पढ़ाई से लाइफ के लिए सच्ची राह मिला जाती है, जिस राह से रूह को राहत मिलती है। ये नॉलेज हमें राइट और रॉंग की बुद्धि देती है। दिव्यबुद्धि अर्थात् जो राइट और रॉंग की जजमेंट करे। आज मनुष्य की बुद्धि राइट और रॉंग की जजमेंट करने में असमर्थ हैं। अपनी–अपनी मत से एक कहेगा ये राइट, दूसरा कहेगा कि ये राइट...। राइट को रॉंग कर देते, रॉंग को राइट कर देते हैं। लेकिन ये नॉलेज जो वास्तविक सत्य है, उसी सत्यता का फौरन जजमेंट देती है। कैसा भी कर्म करते हैं, कैसी भी चाल–चलन कोई चले, राइट–रॉंग की जजमेंट मिलती है। जैसे हंस खीर और नीर दोनों को अलग कर लेता। रत्न चुग लेता है, कंकड़ छोड़ देता है। तो यह नॉलेज हमको हंस बनाती है। राइट–रॉंग की यथार्थ पहचान देती है। दृष्टि–वृत्ति में स्वयं को और औरों को फील होता है कि यह जिस दृष्टि से देखता है वह रूहानियत से देखता है, प्रेम से देखता है, सद्भावना से देखता है या इसकी दृष्टि–वृत्ति कैसी है? यदि अपवित्रता की दृष्टि होगी तो भी अन्दर रियलाइज़ होगा। यदि किसी के लिए नफ़रत होगी तो भी उसकी दृष्टि से मालूम हो जायेगा कि यह किस दृष्टि से मुझे देखता है। चाहे किसी के लिए दिल में अन्दर कोई फीलिंग होगी तो भी उसके चेहरे से दिखाई पड़ जायेगा।

हमको नॉलेज मिली है कि तुम आत्मा इस मस्तक पर मणि की तरह चमकती हुई बिन्दु हो। तुम उस मणि अर्थात् बिन्दु को ही देखो और उस बिन्दु में कितने विशेष गुण हैं, कितनी उसमें रूहानियत की शक्ति है, वही देखो। क्योंकि कोई भी बात पहले बुद्धि में आती फिर वृत्ति में चली जाती है। तो वह वृत्ति फिर दृष्टि से काम करेगी। तो यह वृत्ति और दृष्टि दूसरों को कितना प्रेम देती, रिस्पेक्ट देती, दूसरों के प्रति कितनी सद्भावना देती! यह सब नॉलेज से रियलाइज़ हो जाता है।

(सम्मेलन में आये हुए मेहमानों को संबोधन करते)

ओम् शांति।